PAGE NO: 235
DATE: 01/04/19

'काव्य के लक्षण'

I ~~आचार्य~~ संस्कृत विद्वानों के अनुसार काव्य के लक्षण →

~~आचार्य~~

1. काव्य प्रकाशकार आचार्य मम्मट के अनुसार →

" तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृति: पुन: क्वापि।"

(तद्अदोषौ शब्दार्थौ सगुणौ अनलङ्कृति पुन: क्वापि)

अर्थात् ऐसा शब्द या अर्थ जो दोषों से रहित होता है प्रसाद-ओज-माधुर्य इत्यादि गुणों से युक्त होता है सामान्यत: अलंकारों से भी युक्त होता है परन्तु कभी-कभी अलंकार से रहित शब्दार्थ भी काव्य कहलाता है

नोट:- आचार्य मम्मट ने अपने इस काव्य लक्षण में प्रमुखत: काव्य के तीन लक्षण माने हैं —

(i) (क) अदोषौ अर्थात् दोषों से रहित शब्दार्थ।

(ख) सगुणौ अर्थात् गुणों से युक्त शब्दार्थ।

(ग) अनलङ्कृति पुन: क्वापि अर्थात् कभी-कभी अलंकारों से रहित शब्दार्थ।

(ii) अपने इस काव्य लक्षण में मम्मट ने दो अनिवार्य लक्षण एवं एक ऐच्छिक लक्षण माना है यथा —

अनिवार्य लक्षण →

(क) अदोषौ

(ख) सगुणौ

ऐच्छिक लक्षण —

(क) अलंकार (हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता है)

(iii) आचार्य मम्मट के इस काव्य लक्षण में शब्दार्थौ को विशेष्य पद माना जाता है तथा निम्नलिखित तीन पद विशेषण पद माने जाते हैं —

(क) अदोषौ।

(ख) सगुणौ।

(ग) अनलङ्कृति पुन: क्वापि।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

2. साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार →
"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।"
अर्थात् रसात्मक या रसयुक्त काव्य वाक्य ही काव्य कहलाता है।

3. रसगंगाधरकार आचार्य पंडितराजजगन्नाथ के अनुसार —
"रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।"
अर्थात् रमणीय (सुंदर) अर्थ को प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य कहलाता है।
रमणीयता —
"क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।"
(महाकवि माघ)
अर्थात् जो पल-पल नये रूप को प्राप्त करती है उसे ही रमणीयता कहा जाता है।

4. काव्यालंकारकार आचार्य भामह के अनुसार →
"शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च द्विधा।
संस्कृतं प्राकृतं चान्यदपभ्रंश इति त्रिधा॥"
अर्थात् शब्द एवं अर्थ के समन्वित रूप को ही काव्य कहा जाता है।
रचना के आधार पर यह काव्य दो प्रकार का होता है यथा —
(i) गद्य काव्य
(ii) पद्य काव्य
भाषा के आधार पर यह काव्य तीन प्रकार का होता है यथा —
(i) संस्कृत काव्य
(ii) प्राकृत काव्य
(iii) अपभ्रंश काव्य

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

5. काव्यानुशासनकार आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार →
"अदोषौ सगुणौ सालङ्कारौ च शब्दार्थौ काव्यम् ।"
अर्थात् ऐसा शब्द या अर्थ जो दोषो से रहित होता है तथा गुणो एवं अलंकारो से युक्त होता है उसे ही काव्य कहा जाता है।

6. चन्द्रालोककार आचार्य पियूषवर्ष जयदेव के अनुसार →
"निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषणा ।
सालङ्काररसानेक वृत्तिर्वाक्काव्यनाम भाक् ॥"
अर्थात् ऐसी वाणी (वाक्) जो दोषो से रहित होती है अच्छे लक्षणो से युक्त होती है तीनो रीतियों एवं तीनो गुणो से सुसज्जित होती है अलंकारो से युक्त होती है अनेक प्रकार के रसो से युक्त होती है तथा सभी शब्द शक्तियों से भी युक्त होती है तो उसे ही काव्य के नाम से पुकारा जाता है।

प्रश्न – आचार्य पियूषवर्ष जयदेव द्वारा प्रतिपादित काव्य लक्षण में प्रयुक्त 'वाक्' पद का सही अर्थ है –
✓(A) शब्द ही काव्य है।
(B) अर्थ ही काव्य है।
(C) शब्दार्थ ही काव्य है।
(D) इनमें से कोई नहीं।

7. काव्यादर्शकार आचार्य दण्डी के अनुसार →
"शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली ।"
अर्थात् अभिष्ट या वांछित अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली ही काव्य (शरीर) कहलाती है।

8. अग्निपुराणकार महर्षि वेदव्यास के अनुसार →
"संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली ।
काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद्दोषवर्जितम् ॥"
स्पष्ट

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

अर्थात् ऐसा संक्षिप्त वाक्य या पदावली जो अभिष्ट एवं वांछित अर्थ को प्रकट करती है जिसमें अलंकारों का स्पष्ट प्रयोग किया जाता है। जो गुणों से युक्त होती है तथा दोषों से रहित होती है उसे ही काव्य कहा जाता है

02/09/19

II हिन्दी के विद्वानों के अनुसार काव्य लक्षण →

1. देव कवि के अनुसार →

"सबद जीव तिहि अरथ मन, रसमय सुजस शरीर।
चलत वहै जुग छंद गति, अलंकार गम्भीर॥"

देव कवि ने एक रूपक की कल्पना करते हुये काव्य को तो शरीर के रूप में माना है शब्द को उस काव्य रूपी शरीर की आत्मा (जीव) के रूप में 'अर्थ' को उसके 'मन' के रूप में माना है वर्णिक एवं मात्रिक दोनो प्रकार के छंद इस काव्य शरीर को गति प्रदान करते हैं तथा अलंकार इसे गम्भीरता या विशिष्टता प्रदान करते हैं

2. आचार्य कुलपति मिश्र के अनुसार →

(i) "दोष रहित अरु गुन सहित, कछुए अल्प अलंकार।
सबद अरथ सो कवित्त है, ताको करो विचार॥"

(ii) "जग ते अद्भुत सुख सदन, सबदरु अर्थ कवित्त।
यह लच्छन मैंने कियो, समुझि ग्रन्थ बहु चित्त॥"

आचार्य मम्मट के काव्य लक्षण का हिन्दी अनुवाद मात्र करते हुये आचार्य कुलपति मिश्र ने लिखा है कि (जो) शब्द या अर्थ जो दोषो से रहित होता है सभी गुणों से युक्त होता है तथा जिसमें कुछ अलंकार भी होते हैं उसे ही काव्य के नाम से जाना जाता है

अपना मौलिक काव्य लक्षण प्रतिपादित करते हुए

Scanned by CamScanner

PAGE NO.: 238
DATE: / /

आचार्य कुलपति मिश्र ने लिखा है कि इस संसार में सबसे अधिक अद्भुत एवं विलक्षण सुख प्रदान करने वाला शब्द एवं अर्थ ही काव्य कहलाता है यह लक्षण इन्होंने अनेक ग्रंथो का अध्ययन करके प्रतिपादित किया है

3. आचार्य चिन्तामणि त्रिपाठी के अनुसार →
"सगुण अलंकारन सहित, दोष रहित जो होइ।
शब्द अरथ बारौ कवित, विबुध सबद कहत सब होइ॥"
अर्थात् आचार्य हेमचन्द्र के काव्य लक्षण का हिन्दी अनुवाद मात्र करते हुए चिन्तामणि त्रिपाठी ने लिखा है कि ऐसा शब्द या अर्थ जो गुणो एवं अलंकारो से युक्त होता है तथा दोषो से रहित होता है उसे ही विद्वानो के द्वारा काव्य के नाम से पुकारा गया है।

4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार —
(i) "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे ही कविता कहते है।
(ii) 'सत्वोद्रेक या हृदय की मुक्ति साधना के लिए किया गया शब्द विधान ही कविता या काव्य कहलाता है।

5 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार —
(i) "किसी प्रभावोत्पादक एवं मनोरंजक लेख, बात या वक्तृता का नाम ही कविता है।"
(ii) "अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम ही कविता है।"

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

6. सुदामा प्रसाद पाण्डेय 'धूमिल' के अनुसार →
" कविता शब्दों की अदालत में खड़ी बेकसूर आदमी का हलफनामा है।"

7. जयशंकर प्रसाद के अनुसार →
(i) " सत्य के अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ की गई अभिव्यक्ति ही कविता कहलाती है।"
(ii) " कविता आत्मा के संकल्पनात्मक अनुभूति है इसका संबंध विज्ञान, विश्लेषण एवं विकल्प से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है।"

8. सुमित्रानंदन पंत के अनुसार →
" कविता हमारी परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।"

नोट:- सुमित्रानंदन पंत के अनुसार सम्पूर्ण साहित्य जगत के सबसे पहली कविता किसी वियोगी व्यक्ति के द्वारा लिखी गई मानी जाती है इस सम्बन्ध में इन्होंने लिखा है
" वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप, वही होगी कविता अनजान ॥"

9. महादेवी वर्मा के अनुसार →
" कविता किसी विशेष की भावनाओं का चित्रण है एवं यह चित्रण इतना ठीक होता है कि उससे वैसी ही भावनाएँ दूसरों के हृदय में भी उत्पन्न होने लग जाती हैं।"

10 बाबू गुलाबराय के अनुसार :—
" काव्य संसार के प्रति कवि के भाव प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं के श्रेय को प्रेय देने वाली अभिव्यक्ति है।"

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

III पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार ~~काव्य~~ काव्य लक्षण :—

1. 'कॉलरिज' के अनुसार →

"Poetry is the best words in their best order."

अर्थात् उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम विधान ही कविता है।"

2. ड्राइडन के अनुसार →

"Poetry is the attriculate music."

अर्थात् सुस्पष्ट संगीत ही कविता है।

3. 'मैथ्यू अर्नाल्ड' के अनुसार →

"Poetry is at bottom (मूलतः) a criticism (आलोचना) of life."

अर्थात् कविता मूलतः जीवन की आलोचना है।

4. 'कार्लाइल' के अनुसार →

"Poetry is the musical (संगीतमय) thoughts"

अर्थात् संगीतमय विचार ही कविता है।

5. 'डेनिस' के अनुसार →

"Poetry is the imitation (अनुकरण) of nature"

अर्थात् कविता प्रकृति की अनुकृति है।

सारांश — उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर कविता या काव्य के वास्तविक स्वरूप को अभिव्यक्त करने के लिए प्रमुखतः निम्नलिखित तीन लक्षण प्रतिपादित किये जा सकते हैं यथा —

Scanned by CamScanner

1. मानवीय अनुभूति
2. भाषा द्वारा उसकी अभिव्यक्ति
3. अभिव्यक्ति में कलात्मकता

अर्थात मानवीय अनुभूतियों की भाषा के माध्यम से की गई रसात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति ही काव्य कहलाती है।

www.missiongovtexam.com

02-04-19

काव्य-प्रयोजन

I संस्कृत आचार्यों के अनुसार काव्य-प्रयोजन :—

1. आचार्य भरतमुनि के अनुसार —

(i) " धर्म्यं यशस्यम्आयुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम् ।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति ॥ "

(ii) " दुःखार्तानां श्रमार्तानां तपस्विनाम् ।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति ॥ "

अर्थात् आचार्य भरतमुनि के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुखतः निम्नलिखित छह (06) प्रमुख प्रयोजन माने गये हैं। —

1. धर्म की प्राप्ति
2. यश की प्राप्ति
3. आयु में वृद्धि
4. हित / भला करना/चाहना
5. बुद्धि का विकास
6. लोगों को उपदेश देना

काव्य लेखन का एक सहायक प्रयोजन भी प्रस्तुत करते हुये आचार्य भरतमुनि ने लिखा है दुःख से पिड़ित श्रम से पिड़ित एवं शोक से पिड़ित तपस्वियों (लोगों) को शांति प्रदान करना भी काव्यलेखन का प्रयोजन माना जाता है।

Scanned by CamScanner

2. आचार्य भामह के अनुसार →

"धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिञ्च साधुकाव्य निबंधनम ।।"

अर्थात् आचार्य भामह के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुख चार प्रयोजन माने गये है यथा —

1. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारो पुरुषार्थों की प्राप्ति।
2. कलाओं में निपुणता की प्राप्ति ।
3. कीर्ति (यश) की प्राप्ति ।
4. प्रीति (आनंद) की प्राप्ति ।

3. आचार्य मम्मट के अनुसार :—

काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मितयोपदेशयुजे ।।"

~~आचार्य~~

अर्थात् आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुखतः छह प्रयोजन माने गये है —

1. यश की प्राप्ति के लिए ।
2. अर्थ (धन) की प्राप्ति के लिए ।
3. व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए ।
4. अमंगल के विनाश के लिए ।
5. तुरंत आत्मसंतुष्टि / आनंदोपलब्धि के लिए ।
6. कान्ता के समान उपदेश देने के लिए ।

नोट :— (i) आचार्य मम्मट के द्वारा प्रतिपादित इन छह काव्य प्रयोजनों में से तीन का संबंध कवि अथवा लेखक से माना जाता है तथा तीन का संबंध पाठकों से माना जाता है ।

(क) कवि या लेखक से संबंधित तीन प्रयोजन —

1. यशसे (यश की प्राप्ति)
2. अर्थकृते (धन की प्राप्ति)
3. शिवेतरक्षतये (अमंगल का विनाश)

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

(ख) पाठकों से संबंधित तीन प्रयोजन –
1. व्यवहारविदे (व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति)
2. सद्यः परिनिर्वृतये (तुरंत आत्मसंतुष्टि/आनंदोपलब्धि)
3. कान्तासम्मितयोपदेशयुजे (कान्ता के समान उपदेश)

(ii) आचार्य मम्मट द्वारा प्रतिपादित इन छह काव्य प्रयोजनों में से सद्यःपरिनिर्वृतये (तुरन्त आत्मसंतुष्टि/आनंदोपलब्धि) को सर्वश्रेष्ठ या सकल मौलिभूत काव्य प्रयोजन भी माना जाता है।

1. काव्यं यशसे → इस प्रयोजन का संबंध कवि अथवा लेखक से माना जाता है अर्थात् काव्य लेखन से कवि को यश की प्राप्ति होती है वह संसार में सदा सदा के लिये अमर हो जाता है।
हिन्दी साहित्य में मलिक मोहम्मद जायसी के द्वारा 'पद्मावत' महाकाव्य इसी प्रयोजन से लिखा गया है इस संबंध में स्वयं जायसी ने लिखा है
"औ मन जानि कबित्त अस कीन्हा।
मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा॥"

2. काव्यं अर्थकृते → इस प्रयोजन का संबंध भी कवि अथवा लेखक से माना जाता है अर्थात् काव्य लेखन से कवि को धन की प्राप्ति होती है।
हिन्दी साहित्य जगत में बिहारी, केशवदास, भूषण इत्यादि कवियों ने इसी प्रयोजन से काव्य लेखन कार्य किया है कवि बिहारी को तो प्रत्येक पद रचना के लिए एक सोने की मोहर प्राप्त होने का उल्लेख भी मिलता है।

3. काव्यं व्यवहारविदे → इस प्रयोजन का संबंध पाठकों से माना जाता है अर्थात् किसी भी काव्य रचना को पढ़ने

Scanned by CamScanner

पर पाठकों को व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति होती है
निम्नलिखित रचनाएँ इसी प्रयोजन से रचित मानी जाती हैं

क्र.सं.	रचना का नाम	कवि या लेखक का नाम
1.	रामायण (संस्कृत	→ महर्षि वाल्मीकि
2.	रामचरितमानस	→ गोस्वामी तुलसीदास
3	पंचतंत्र	→ पंडित विष्णु शर्मा
4	हितोपदेश	→ नारायण पण्डित
5	नीतिशतक	→ भर्तृहरि

4. काव्यं शिवेतरक्षतये → 'शिवेतरक्षतये' शब्द 'शिव + इतर + क्षतये' के योग से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'अमंगल का विनाश'
इस प्रयोजन का संबंध कवि अथवा लेखक से माना जाता है अर्थात् अपनी किसी अमंगल के विनाश के लिए भी कवियों के द्वारा काव्य रचना की जाती है।
साहित्य जगत में निम्नलिखित रचनाएँ इसी प्रयोजन से लिखी गई हैं –

क्र.सं.	रचना का नाम	कवि या लेखक का नाम
1.	हनुमानबाहुक	→ गोस्वामी तुलसीदास
2	सूर्यशतक	→ मयूरभट्ट
3.	चण्डीशतक	→ बाणभट्ट
4.	कुरुक्षेत्र	→ रामधारी सिंह 'दिनकर'
5	अंधायुग	→ धर्मवीर भारती

5. काव्यं सद्यः परिनिर्वृत्तये → इस प्रयोजन का संबंध पाठकों से माना जाता है अर्थात् काव्य रचनाओं को पढ़ने पर पाठकों को तुरंत आत्मसंतुष्टि या आनंदप्राप्ति होती है।
मम्मट द्वारा प्रतिपादित सभी काव्य प्रयोजनों में

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

यह सर्वश्रेष्ठ या सकल मौलीभूत काव्य प्रयोजन भी माना जाता है।

• काव्यं कान्तासम्मितयोपदेशयुजे → इस प्रयोजन का संबंध पाठकों से माना जाता है अर्थात् काव्य रचना को पढ़ने पर पाठकों को पत्नी के समान उपदेश की प्राप्ति होती है।

साहित्य जगत् में उपदेश तीन प्रकार के माने जाते हैं यथा –

(i) प्रभु सम्मित उपदेश → यह उपदेश हमारे लिए हितकर तो होता है परन्तु रुचिकर नहीं होता है फिर भी हम इसको मानने के लिए बाध्य होते हैं।
समस्त प्रकार वैदिक ज्ञान प्रभुसम्मित उपदेश ही माना जाता है।

(ii) मित्र सम्मित उपदेश → यह उपदेश हमारे लिए हितकर भी होता है एवं रुचिकर भी होता है परन्तु इसको मानने के लिए कोई बाध्यता नहीं होती है।
18 पुराणों एवं इतिहास ग्रंथों का ज्ञान मित्र सम्मित उपदेश ही माना जाता है।

(iii) कान्ता सम्मित उपदेश → यह उपदेश हमारे लिए हितकर भी होता है एवं रुचिकर भी होता है तथा समस्त लोगों के द्वारा इस उपदेश को सहज रूप में स्वीकार भी कर लिया जाता है।
समस्त प्रकार की काव्य रचनाओं का ज्ञान कान्ता सम्मित उपदेश ही माना जाता है।

03-05-19

4. आचार्य विश्वनाथ के अनुसार →
"चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥"
अर्थात् आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुखतः

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

दो प्रयोजन माने गये है –
(i) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारो पुरूषार्थो (चतुर्वर्ग) के फल की प्राप्ति।
(ii) अल्प बुद्धि लोगों को भी सुख की प्राप्ति।

→ संस्कृत के अन्य विद्वानो के अनुसार काव्य प्रयोजन →

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल प्रयोजन	विवरण
1.	आचार्य रुद्रट	→ 04	→ (i) विश्व व्यापी यश (ii) विपत्ति नाश (iii) अलौकिक आनंद (iv) आप्त कामना
2.	आचार्य वामन/जयदेव	→ 02.	→ (i) प्रीति (दृष्ट प्रयोजन) (ii) कीर्ति (अदृष्ट प्रयोजन)
3.	आचार्य आनंदवर्धन	→ 01	→ (i) प्रीति (हृदय का आह्लाद)
4.	आचार्य राजशेखर	→ 01	→ (i) कीर्ति
5.	आचार्य कुंतक	→ 02	→ (i) अलौकिक आनंद का जनक (ii) व्यवहार का साधक
6	आचार्य दण्डी	→ 0 2	→ (i) यश की प्राप्ति (ii) ज्ञान की प्राप्ति

II हिन्दी के विद्वानो के अनुसार काव्य प्रयोजन →

1. गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार →
(i) "स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा।"
(ii) "कीरति भनिति (कविता) भूति (सम्पत्ति) भल सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।"

अर्थात गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुखत: दो प्रयोजन माने गये है –
(i) स्वान्तः सुखाय अर्थात कवि को स्वयं को सुख की प्राप्ति होना।
(ii) लोगों का भला करना।

Scanned by CamScanner

2. मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार →
"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ॥"
अर्थात् मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुखत: दो प्रयोजन माने गए हैं —
(i) लोगों का मनोरंजन करना।
(ii) लोगों को समुचित उपदेश देना।

3. आचार्य कुलपति मिश्र के अनुसार →
"जस सम्पत्ति आनंद अति, दुरितन (पाप) डारै खोई।
होत कवित्त ते चतुरई, जगत राग बस होई ॥"
अर्थात् आचार्य कुलपति मिश्र के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुखत: छह प्रयोजन माने गए हैं —
(i) यश की प्राप्ति।
(ii) सम्पत्ति (धन की प्राप्ति)।
(iii) अत्यधिक आनंद की प्राप्ति।
(iv) पापों का विनाश।
(v) चतुरता की प्राप्ति।
(vi) सांसारिक प्रेम की प्राप्ति (संसार को प्रेम के वशीभूत करलेना)।

4. आचार्य सोमनाथ के अनुसार →
"कीरति वित्त विनोग, अरु, अति मंगल को देति।
करै भलो उपदेश नित, वह कवित्त चित्त चेति ॥"
अर्थात् आचार्य सोमनाथ के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुखत: पाँच प्रयोजन माने गये हैं —
(i) कीर्ति (यश) की प्राप्ति।
(ii) वित्त (धन) की प्राप्ति।
(iii) विनोद (मनोरंजन) की प्राप्ति।
(iv) मंगल कामना।
(v) लोगों की भलाई के उपदेश।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

हिन्दी के अन्य विद्वानो के अनुसार काव्य प्रयोजन →

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल प्रयोजन	विवरण
1.	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	→ 02	→ (i) लोकमंगल की साधनावस्था (ii) रसानुभूति
2.	सुमित्रानंदन पंत	→ 01	→ (i) मुक्त जीवन सौन्दर्य की अभिव्यक्ति
3.	देव कवि	→ 01	→ (i) यश (अमरता)
4.	कबीरदास	→ 01	→ (i) लोकमंगल
5.	सूरदास	→ 01	→ (i) आनंद
6.	महावीर प्रसाद द्विवेदी	→ 02	→ (i) आनंद की प्राप्ति (ii) ज्ञान की प्राप्ति
7.	हजारी प्रसाद द्विवेदी	→ 01	→ (i) लोकमंगल
8.	गजानन माधव मुक्तिबोध	→ 01	→ (i) सांस्कृतिक परिष्कार
9.	मुंशी प्रेमचंद	→ 03	→ (i) मनोरंजन (ii) परिष्कृति (उपदेश) (iii) उद्घाटन (रहस्यपूर्ण बातों को खोलें)
10	जयशंकर प्रसाद	→ 02	→ (i) मनोरंजन (ii) शिक्षा
11.	अयोध्या प्रसाद सिंह	→ 05	→ (i) सरसता (ii) मुग्धता (iii) ज्ञान (iv) नित्य उपदेश (v) आनंद

III पाश्चात्य विद्वानो के अनुसार काव्य प्रयोजन →

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल प्रयोजन	विवरण
1.	प्लेटो	→ 01	→ (i) लोकमंगल
2.	टॉल्सटॉय	→ 01	→ (i) "
3.	रस्किन	→ 01	→ (i) "
4.	शिलर	→ 01	→ (i) आनंद
5	ड्राइडन	→ 01	→ (i) आनंद

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

6. अरस्तू	→ 02	→ (i) नीति	(ii) आनंद
शैली / शैले	→ 02	→	"	"
मैथ्यू अर्नाल्ड	→ 02	→	"	"

नोट :- पाश्चात्य विद्वानो के द्वारा काव्य लेखन के सारांशत: निम्नलिखित सात (07) प्रयोजन स्वीकार किये गये हैं—

(i) काव्य कला, कला के लिए है।
(ii) काव्य कला, जीवन के लिए है।
(iii) काव्य कला, जीवन से पलायन के लिए है।
(iv) काव्य कला, मनोरंजन के लिए है।
(v) काव्य कला, आत्म साक्षात्कार के लिए है।
(vi) काव्य कला, सृजनात्मक आवश्यकता की पूर्ति के लिए है।
(vii) काव्य कला, अभिव्यंजना (रहस्यपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति) के लिए है

विशेष तथ्य → पाश्चात्य विद्वानो के द्वारा प्रतिपादित इन सभी काव्य प्रयोजनो को 'कलामतवाद' के नाम से भी जाना जाता है

इन सातों काव्य प्रयोजनों का सर्वप्रथम उल्लेख 1845 ई० में विक्टर कुजाँ नामक विद्वान के द्वारा किया गया था।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

काव्य-हेतु

→ हेतु का शाब्दिक अर्थ होता है 'कारण' अर्थात् जिन प्रमुख कारणों से कोई व्यक्ति किसी काव्य या कविता को लिखने में सफल हो जाता है इसे ही काव्य हेतु कहा जाता है।

→ भारतीय मनीषियों (विद्वानों) के द्वारा काव्य लेखन के प्रमुखतः तीन हेतु स्वीकार किये गये हैं —

1. प्रतिभा (ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्ति)
2. व्युत्पत्ति (स्वयं के प्रयासों से अधीत शास्त्रों के अध्ययन से अथवा सांसारिक अनुभवों से अर्जित ज्ञान)
3. अभ्यास (बार-बार का दोहराव)

→ काव्य हेतुओं का विवेचन →

1. काव्य हेतुओं का सर्वप्रथम विवेचन अग्निपुराण में प्राप्त होता है अग्नि पुराण में एक मात्र 'शक्ति' (प्रतिभा) को ही काव्य हेतु के रूप में स्वीकार किया गया है —

" नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥"

अर्थात् इस संसार में सर्वप्रथम तो मनुष्य जीवन प्राप्त करना ही दुर्लभ है मनुष्य जीवन प्राप्त करने के बाद विद्या प्राप्त करना दुर्लभ है विद्या प्राप्त होने के बाद कवित्व शक्ति प्राप्त करना दुर्लभ है क्योंकि काव्य रचना करने की क्षमता तो एक मात्र ईश्वर प्रदत्त शक्ति (प्रतिभा) के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

2. अग्निपुराण के बाद आचार्य भामह के द्वारा स्वरचित काव्यालंकार रचना में एकमात्र प्रतिभा को ही प्रमुख काव्य हेतु के रूप में स्वीकार किया गया —

" गुरूदेशादध्येतुं शास्त्रं जडधियोऽप्यलम्।
काव्यं तु जायते जातु कस्यचिद् प्रतिभावतः ॥"

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

अर्थात् गुरु के द्वारा पढ़ाये जाने पर तो मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी शास्त्रों को पढ़ने में सफल हो सकता है परन्तु काव्य रचना तो किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के द्वारा ही की जा सकती है।

3. आचार्य दण्डी के द्वारा स्वरचित काव्यादर्श रचना में काव्यलेखन के प्रमुखत: तीन हेतु स्वीकार किये गये हैं —

"नैसर्गिकी प्रतिभा च, श्रुतं च बहुनिर्मलम् ।
आनन्दश्चाभियोगोऽस्या:, कारणं काव्यसम्पद: ॥"

अर्थात्

(i) नैसर्गिकी प्रतिभा (जन्मजात ईश्वर प्रदत्त शक्ति)
(ii) श्रेष्ठ शास्त्रों का अध्ययन (व्युत्पत्ति)
(iii) आनंद पूर्वक अभियोग (अभ्यास)

नोट:— (i) आचार्य दण्डी साहित्य जगत में तीन काव्य हेतु स्वीकार करने वाले सर्वप्रथम विद्वान भी माने जाते हैं
(ii) आचार्य दण्डी ने एक जगह यह भी लिखा है कि प्रतिभा, व्युत्पत्ति एवं अभ्यास इन तीनों के द्वारा तो एक श्रेष्ठ उत्तम श्रेणी का काव्य रचा जाता है परन्तु प्रतिभा के अभाव में भी व्युत्पत्ति एवं अभ्यास के द्वारा मध्यम श्रेणी का काव्य रचा जा सकता है

4. 12वीं शताब्दी में आचार्य मम्मट के द्वारा भी प्रमुखत: तीन एवं कुल चार काव्य हेतु स्वीकार किये गये थे —

"शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात् ।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास: इति हेतुस्तदुद्भवे ॥"

(i) शक्ति (प्रतिभा) ।
(ii) निपुणता (व्युत्पत्ति) ।
(क) शास्त्रीय व्युत्पत्ति → शास्त्रों के अध्ययन से प्राप्त निपुणता ।
(ख) लौकिक व्युत्पत्ति → सांसारिक अनुभवों से प्राप्त निपुणता ।
(iii) अभ्यास ।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

→ संस्कृत के अन्य विद्वानों के अनुसार प्रतिपादित काव्य हेतु :→

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल काव्य हेतु	विवरण
1.	आचार्य वामन	→ 01	→ (i) कवित्व बीज (प्रतिभा)
2.	आचार्य राजशेखर	→ 02	→ (i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति
3.	आचार्य केशव मिश्र	→ 01	→ (i) प्रतिभा

(कथन – "प्रतिभा कारणं तस्य व्युत्पत्तिः विभूषणम् ।")

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल काव्य हेतु	विवरण
4.	आचार्य पंडितराज जगन्नाथ	→ 01	→ (i) प्रतिभा
5	आचार्य हेमचन्द्र	→ 01	→ (i) प्रतिभा
6.	आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव	→ 03	→ (i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति (iii) अभ्यास

नोट :— आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव ने काव्य हेतुओं को निम्नानुसार एक रूपक के रूप में भी प्रतिपादित किया है –

(i) काव्य / कविता → 'वृक्ष'
(ii) प्रतिभा → 'बीज'
(iii) व्युत्पत्ति → मिट्टी (मृदा)
(iv) अभ्यास → जल

→ हिन्दी के विद्वानों के अनुसार प्रतिपादित काव्य हेतु →

1. आचार्य श्रीपति (रचना- 'काव्य सरोज' के अनुसार →

"शक्ति निपुणता लोकमत बितपति अरु अभ्यास ।
अरु प्रतिभा ते होत हैं ताको ललित प्रकास ॥"

अर्थात आचार्य श्रीपति के अनुसार कुल छह काव्यहेतु स्वीकार किये गये हैं —

(i) शक्ति (ii) निपुणता (iii) लोकमत
(iv) व्युत्पत्ति (v) अभ्यास (vi) प्रतिभा

2. 'आचार्य शुकदेव मिश्र' के अनुसार →

"कारण देव प्रसाद जिहि, शक्ति कहत सब कोई ।
बितपति अरु अभ्यास मिलि, त्रय बिनु काव्य न होई ॥"

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

अर्थात् आचार्य शुकदेव मिश्र के अनुसार काव्य के प्रमुख तीन हेतु माने गये हैं –
(i) शक्ति (प्रतिभा)
(ii) व्युत्पत्ति
(iii) अभ्यास

→ अन्य हिन्दी विद्वानो द्वारा प्रतिपादित काव्य हेतु →

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल काव्य हेतु	विवरण
1.	आचार्य भिखारीदास	→ 03	→ (i) शक्ति (ii) लोकानुभव (iii) काव्य अध्ययन
2.	आचार्य कुलपति मिश्र	→ 03	→ (i) शक्ति (ii) व्युत्पत्ति (iii) अभ्यास
3.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल →	→ 03	→ (i) प्रतिभा (मुख्य हेतु) (ii) व्युत्पत्ति (iii) अभ्यास](सहायक हेतु)
4.	डॉ. नगेन्द्र →		
5.	महावीर प्रसाद द्विवेद →		
6	महादेवी वर्मा	→ 02	(i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति
7.	सुमित्रानंदन पंत		

04/04/19

→ पाश्चात्य विद्वानो के अनुसार प्रतिपादित काव्य हेतु →

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल काव्य हेतु	विवरण
1.	प्लेटो	→ 01	→ (i) मानसिक विक्षिप्तता
2.	अरस्तू	→ 03	→ (i) अनुकरण (ii) सामंजस्य (iii) लय
3	सिगमंड फ्रायड	→ 02	→ (i) दमित कामनाएँ (ii) अतृप्त वासनाएँ
4.	एडलर	→ 01	→ (i) मन के अभाव या हीनता
5.	विलियम हडसन	→ 04	→ (i) अभिव्यंजना की इच्छा (ii) मनुष्यों एवं उसके कार्यों के प्रति अनुराग

Scanned by CamScanner

(iii) काल्पनिक जगत् के प्रति अनुराग
(iv) सौन्दर्यानुभूति

6. युंग या जुंग → 01 → (i) कवि हृदय में स्थित प्रमुखकामना

नोट :— युंग/जुंग ने कवियों को निम्नानुसार तीन श्रेणियों में भी विभाजित किया है :—
(i) अन्तर्मुखी कवि → रीतिग्रंथ/लक्षणग्रंथ/गीति काव्य लिखने वाले कवि।
(ii) बहिर्मुखी कवि → कहानी, उपन्यास आदि लिखने वाले कवि।
(iii) उभयमुखी कवि → महाकाव्य लिखने वाले कवि।

सारांश → वर्तमान में साहित्य जगत में निम्नानुसार प्रमुखतः तीन काव्य हेतु ही स्वीकार किये जाते हैं —
(i) प्रतिभा
(ii) व्युत्पत्ति
(iii) अभ्यास

1. प्रतिभा

→ किसी भी मनुष्य शरीर में अथवा हृदय में उत्पन्न एक ऐसी जन्मजात शक्ति जो उसे नित्य कुछ नया करने के लिए प्रेरित करती रहती है, उसे ही प्रतिभा कहते हैं।

→ प्रतिभा की परिभाषाएँ →

1. भट्टतौत/ वाग्भट्ट/ आचार्य हेमचंद्र के अनुसार →
"नित्यं नवन्वोन्मेषशालिनी प्रज्ञा प्रतिभा।"
अर्थात् एक ऐसी बुद्धि जो मनुष्य को नित्य कुछ नया करने के लिए प्रेरित करती है उसे ही प्रतिभा कहते हैं।

2. आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार →
"प्रतिभा अपूर्व वस्तु निर्माणक्षमा प्रज्ञा।"
अर्थात् एक ऐसी बुद्धि जो किसी मनुष्य को किसी अपूर्व या विशिष्ट वस्तु का निर्माण करने की क्षमता प्रदान करती है उसे ही प्रतिभा कहते हैं।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

3. आचार्य मम्मट के अनुसार →
"शक्तिः (प्रतिभा) कवित्व[illegible] बीजरूपः संस्कार विशेषः।"
अर्थात एक ऐसी शक्ति जो हमारे हृदय में कवित्व का बीज बोती है उस कवित्व बीज रूपी संस्कार विशेष को ही शक्ति या प्रतिभा कहा जाता है

4. आचार्य वामन के अनुसार →
"कवित्वबीजं प्रतिभानं कवित्वस्य बीजम्।"
अर्थात् कवित्व या काव्य रचना के बीज को ही प्रतिभा कहते हैं।

→ प्रतिभा की प्रमुख विशेषताएँ →
1. प्रतिभा ईश्वर-प्रदत्त जन्मजात शक्ति है।
2. प्रतिभा नित्य नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा है।
3. प्रतिभा कवित्वबीजरूप संस्कार विशेष है।
4. भारतीय मनीषियों (विद्वानों) के द्वारा प्रतिपादित तीन काव्य हेतुओं में 'प्रतिभा' को सर्वप्रमुख काव्य हेतु माना जाता है
5. प्रतिभा के कारण ही कवि अपने काव्य में रस, छंद, गुण, अलंकार इत्यादि साहित्यिक तत्वों का प्रयोग करने में सफल होते हैं।

→ प्रतिभा के भेद → आचार्य राजशेखर के द्वारा स्वरचित 'काव्यमिमांसा' रचना में प्रतिभा के प्रमुखतः दो भेद प्रतिपादित किये गये हैं:—
1. कारयित्री प्रतिभा
2. भावयित्री प्रतिभा

1. कारयित्री प्रतिभा → इस प्रतिभा का संबंध कवि अथवा लेखक से माना जाता है अर्थात् अपनी जिस शक्ति के कारण कोई कवि काव्य रचना करने में सफल हो जाता है वही कारयित्री प्रतिभा कहलाती है।
2. भावयित्री प्रतिभा → इस प्रतिभा का संबंध पाठकों से माना जाता है अर्थात् अपनी जिस शक्ति के कारण

Scanned by CamScanner

पाठक किसी काव्य के अर्थ या भाव को ग्रहण कर पाने में सफल होते हैं उसे ही भावयित्री प्रतिभा कहते हैं।

आचार्य रुद्रट के द्वारा भी स्वरचित 'काव्यालंकार' रचना में प्रतिभा के दो भेद किये गये हैं यथा—

(i) सहजा प्रतिभा — ईश्वर प्रदत्त जन्मजात शक्ति।

(ii) उत्पाद्या प्रतिभा — अपने प्रयासों से अर्जित शक्ति।

2. व्युत्पत्ति

→ इस संसार में जन्म लेने के बाद मनुष्य अपने प्रयासों से जो शक्ति या ज्ञान अर्जित करता है उसे ही व्युत्पत्ति कहते हैं।

→ व्युत्पत्ति को ही 'निपुणता / कुशलता / विद्वता / पाण्डित्य' इत्यादि नामों से भी पुकारा जाता है

→ आचार्य राजशेखर ने व्युत्पत्ति की परिभाषा देते हुए लिखा है—

"उचितानुचितौ विवेकौ व्युत्पत्तिः।"

अर्थात् उचित (सही) एवं अनुचित (गलत) का ज्ञान करवाने वाली शक्ति को ही व्युत्पत्ति कहा जाता है।

व्युत्पत्ति के भेद :— आचार्य मम्मट के द्वारा व्युत्पत्ति के प्रमुखतः दो भेद माने गए हैं—

1. शास्त्रीय व्युत्पत्ति
2. लौकिक व्युत्पत्ति

1. शास्त्रीय व्युत्पत्ति → इस संसार में रहकर पूर्व में लिखे गए प्रसिद्ध ग्रंथों / शास्त्रों का अध्ययन करके जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे शास्त्रीय व्युत्पत्ति कहते हैं।

2. लौकिक व्युत्पत्ति → इस संसार में रहकर अपने सांसारिक अनुभवों से जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे ही लौकिक व्युत्पत्ति कहते हैं।

नोट :— किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए ये दोनों व्युत्पत्तियाँ एक दूसरे की पूरक के रूप में कार्य करती हैं।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

www.missiongovtexam.com

है अर्थात् शास्त्रों का अध्ययन करके एवं सांसारिक अनुभव प्राप्त करके ही कार्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है

3. अभ्यास

-> एक ही कार्य का बार-बार दोहराव करना ही अभ्यास कहलाता है।

-> 'अभ्यासो ही ~~परम गुरु~~ कर्मसु कौशलम' अर्थात् अभ्यास करने से ही कार्यों में कुशलता प्राप्त होती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब भी कोई कार्य पहली बार किया जाता है तो उसमें कुछ कमियों का रह जाना स्वाभाविक है लेकिन उसी कार्य को बार बार सम्पन्न करने पर उन सभी कमियों को धीरे धीरे दूर किया जा सकता है।

इसी प्रकार काव्य रचना में भी बार-बार अभ्यास से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

Scanned by CamScanner